

सरकार करे अत्याचार

बीणा शिवपुरी

- ★ पटवारी ने घूस मांगी। कार्यकर्ता ने इनकार कर दिया। उसे पकड़ कर मारा-पीटा, उसका सिर फोड़ दिया। नक्सलवादी होने का आरोप लगा कर जेल में ठूस दिया।
- ★ गांव के पास चराई के लिए ज़मीन थी। तहसीलदार, पटवारी मिल-बांट कर खा जाना चाहते थे। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने लोगों को संगठित किया। मंत्रियों, अफसरों को चिट्ठियां लिखी। उनके साथ मार-पीट की गई। 22 दिन तक जेल में बंद कर दिया गया। इसमें लड़के-लड़कियां दोनों शामिल थे।
- ★ एक गांव के थानेदार ने औरत कार्यकर्ता को पकड़ कर थाने में बिठाए रखा, गालियां दी, धमकियां दी। फिर कहा गांव छोड़ कर भाग जाओ। दोबारा नज़र आई तो नहीं बचोगी।
- ★ आदिवासी लड़की के साथ साहुकारों ने बलात्कार किया। कार्यकर्ताओं ने आंदोलन चलाया। पुलिस ने शांत जुलूस पर हमला कर मारा-पीटा, गिरफ्तार कर लिया। स्त्री कार्यकर्ता को चरित्रहीन बताया। बदनामी की। धमकी भरी चिट्ठियां भेजीं। यहां तक कि जान से मारने की धमकी दी।

ये सारी घटनाएं किसी जंगल में नहीं हुईं। किसी ऐसे प्रदेश में नहीं हुईं जहां कोई कानून न हो। बल्कि स्वतंत्र लोकतांत्रिक भारत के एक राज्य मध्य प्रदेश में हुईं। जहां लोगों की चुनी हुई सरकार है। जहां पुलिस है, कानून है, न्यायालय हैं।

यहां ध्यान देने की बात यह है कि बेगुनाह लोगों पर कहर ढाने वाले लोग वही हैं जिनका काम लोगों को बचाना है। जो कानून के रखवाले हैं, वही कानून से खेल रहे हैं। जनता की वोटों से मंत्री बन जनता की सेवा करने वाले नेता भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। जनता को कुचल रहे हैं।

स्वार्थी वर्ग की साजिश

इस सबके पीछे कारण है शासक और धनी

वर्ग का स्वार्थ। जिनके पास बहुत अधिक है वे और चाहते हैं। उनके लालच की भूख सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती ही जाती है। चाहे इसके लिए आम गरीब आदमी के हक मारने पड़ें। उसके मुंह से रोटी का टुकड़ा छीनना पड़े।

ये आम गरीब आदमी जो बहुसंख्यक हैं थोड़े से लोगों के शोषण का शिकार हैं।

जन चेतना की कोशिश

मध्य प्रदेश के कई संगठनों ने मिल कर अपने आपको एकता परिषद के झण्डे तले एकजुट किया है। गरीब बहुसंख्यकों का शोषण तभी रुक सकता है जब उनमें चेतना जागे। जब वे अपने हकों के लिए लड़ना सीखें। यही सपना है एकता परिषद का। इसके कार्यकर्ता अपनी इज्जत, यहां तक कि

अपनी जान खतरे में डाल कर ये काम कर रहे हैं। ज़ाहिर है कि वे शासक और धनी वर्ग की आंखों में खटकते हैं। अफसोस यह है कि सरकार भी इस चंडाल चौकड़ी का हिस्सा है।

सरकार का खैया है कि सामाजिक चेतना को कुचल दो। पुलिस सरकारी पिट्टू के रूप में कार्यकर्ताओं को हर तरह से प्रताड़ित कर रही है। कानून का नाज़ायज फ़ायदा उठा कर झूठे इलजामों में गिरफ्तार कर रही है। औरतों को बेइज्जत करने की धमकी दे कर डरा रही है।

एक महिला कार्यकर्ता ने बताया—“मुझे पकड़ा, गाली दी, मारा-पीटा। फिर कहा अगर दोबारा यहां आई तो आंखों में मिर्ची भर देंगे। नंगा करके बेइज्जती करेंगे।”

नक्सलवादी बता कर आम आदमियों को हर तरह से सताया जा रहा है। दक्षिण बस्तर के एक कार्यकर्ता ने बताया कि जब सच में नक्सलवादी आए तो पुलिस भाग गई। बाद में बोले हम मरना थोड़े ही चाहते हैं। अपनी इस नाकामी को ढकने के लिए किसी को भी पकड़ कर नक्सलवादी बता देते हैं।

जलता हुआ सवाल

आज हम सब के मन में यह सवाल उठता है कि जिन्हें हमने चुना है, जिनके हाथ में हमने ताक़त दी है आज वही अत्याचारी बन बैठे हैं तो क्या हमें चुप बैठना चाहिए?

चूंकि हम ईंट का बदला पत्थर से नहीं देना चाहते। हिंसा के बदले बड़ी हिंसा में विश्वास नहीं करते। हमारे लिए एक ही रास्ता है कि और जोश से साथ जन चेतना में जुट जाएं। आपसी संपर्क, बातचीत, अख़बार और पत्रिकाओं के

ज़रिए इस मिली-भगत का भंडाफोड़ करें। हम सब अपनी पूरी ताक़त से कार्यकर्ताओं के साथ होने वाले इस अत्याचार का विरोध करेंगे।

